बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- balaknamaeditor@gmail.com

अंक-90 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | नवंबर-दिसंबर 2020 | मूल्य - 5 रूपए

कैसे सरकारी स्कूलों से मिलने वाली सुविधाओं से महरूम है बच्चे और क्या है उसके नुकसान?

बालाकनामा सलाहकार शंन्नो

पत्रकार ने इस बारे में जायजा लेने हेतु अलग जिले में स्कूल जाने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बातचीत की तो पत्रकारों को बच्चों की दयनीय स्थिति का एक ओर नजारा देखने को मिला।बच्चों को बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले कुछ बच्चों को कहीं ना कहीं बहुत सी मुसीबतों का सामना करना पड़ा है। कोविड 19 चलते सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे भी सरकारी सुविधाओं से वंचित रहे हैं। क्योंकि जब बच्चे स्कूल जाते थे उन्हें एनीमिनिया की गोली, मिडडे मील स्टेशनरी, वाजिफे, सेनेटरी पैड इत्यादि मिला करते थे।जब इन बच्चों से बालकनामा रिपोर्टर ने बातचीत की उनका कहना था कि हमें फोन के माध्यम से बताया गया कि स्कूल कब तक बंद है। लेकिन इस प्रकार की कोई भी हमें सुविधा नहीं मिली।और कोविड 19 में लॉक डाउन होने के कारण हमारे घर की आर्थिक स्थिति खराब होने लगी। इसीलिए अब हम काम करते हैं अब हमारा स्कूल से ध्यान हट चुका है। नाहीं हमारे पास पढ़ने लिखने के लिए कॉपी कलम है और नाहीं हमें स्कूल से संपर्क किया जाता है। इस स्थिति में हम लोग अपने घर को चलाने के लिए मम्मी पापा का हाथ बटाते हैं और छोटे-मोटे काम करके थोड़े बहुत पैसे इकट्ठा करते हैं ताकि हम अपने घर का खर्चा चला सके वहीं 12 वर्षीय सोनू ने कहा कि मैं चौथी कक्षा का छात्र हूं और हमारे पास स्मार्टफोन नहीं है एक बार हमारे

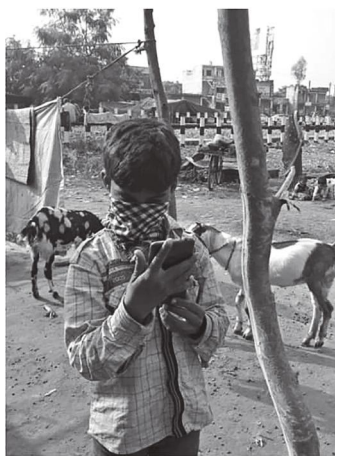

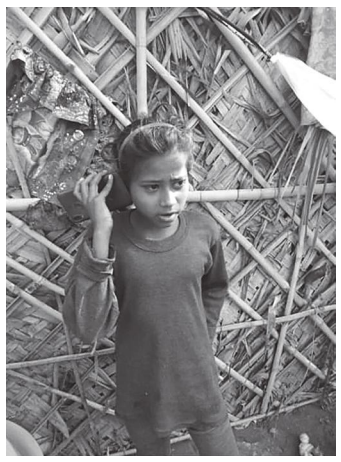

स्कूल से सर आए और उन्होंने कहा कि स्मार्टफोन लो ताकि आप ऑनलाइन पढ़ाई कर सकें पापा रिक्शा चलाते हैं मम्मी कोठी में काम करती है और हमारे पास बड़ा मोबाइल ना होने कारण मैं ऑनलाइन पढ़ाई नहीं कर पा रहा हूं।जब से लॉक डाउन हुआ था तब से अभी तक मैं एक भी ऑनलाइन क्लास अटेंड नहीं कर पाया हूं। वहीं 13 वर्षीय रोशनी ने कहा कि मैं पांचवी कक्षा की छात्र हूं और जब मैं पहले स्कूल जाती थी तो मुझे मिड डे मील में पूरी छोले- चावल छोले चावल मिलते थे लेकिन जब से कोविड 19 की वजह से लॉकडाउन लगा था तब से लेकर अब तक हमारा स्कूल बंद ही है। और तब से हमें कोई भी सुविधा नहीं मिली।और ना हमें स्कूल की तरफ से सुविधा दी गई है। इस कारण से मेरी मम्मी मुझको अपने साथ रोज काम पर लेकर जाती है और मैं मम्मी के साथ उनके काम में हाथ बटाती हूं हमें कुछ पैसे उस काम के बदले मिलते है 13 वर्षीय रोशनी के माताजी देवीलाल ने इस दौरान बताया कि हमारे बच्चे पहले स्कूल जाते थे लेकिन जब से लॉकडाउन लगा है तब से अब तक कोई भी स्कूल की तरफ से हमारे बच्चों को मिलने नहीं आया है। इस कारण से हम इनको घर पर नहीं रखते अपने साथ काम पर ले जाते हैं क्योंकि घर पर बच्चों को कौन देखेगा और आसपास में बहुत सारे हादसे भी होते रहते हैं इस कारण से हम अपने साथ बच्चों को काम पर लेकर जाते हैं। 11 वर्षीय राहुल ने बताया कि मैं जब पहले स्कूल जाता था तो हमें मिड-डे-मील और कॉपी कलम किताब और स्कूल की ड्रेस मिलता था लेकिन कोविड 19 के कारण से हमें यह सुविधाएं नहीं मिली। हम बहुत निराश हैं और जो पहले हम पढ़ना लिखना जानते थे वह सब भूल गए हैं। 11 वर्षीय चांदनी ने बताया कि मैं तीसरी कक्षा की छात्र हूं और मैं प्राइमरी स्कूल में पढ़ती हूं मेरे स्कूल में पहले जब हम स्कूल जाते थे तो हमें खाने पीने का सामान और कॉपी कलम ड्रेस इत्यादि समय-समय पर मिलता था लेकिन अब हमारे स्कूल बंद है और इस कारण से हमें वहां की कोई भी सुविधा नहीं मिलती हमारे पास स्मार्टफोन नहीं है बड़े फोन नहीं है इस कारण से हम पढ़ाई भी नहीं कर पाते हैं। स्कूल की क्लास हमें बहुत याद आती है। अब हम अपने पिता जी के साथ काम पर जाने लगे हैं। जिससे हमारा घर का खर्चा चलता है। 48 वर्षीय धनवंतरी ने कहा कि पहले हमारे बच्चे स्कूल जाते थे लेकिन अब वह स्कूल नहीं जाते क्योंकि स्कूल बंद है और वहां से कोई भी हमें बच्चों के वाजिफे जैसी सुविधा नहीं मिली जबकि मेरे पति का काम भी छूट गया था और हम बच्चों की स्कूल की जरूरतों को पूरा नहीं कर पा रहे थे। इस कारण से बच्चे भी मेरे साथ काम पर जा रहे हैं। बच्चों का कहना था कि जब स्कूल के अंदर थे तो कई ऐसी सुविधाएं हमें प्राप्त होती थी। जैसे मिड्डे मील, वाजिफा,इत्यदि लेकिन लॉकडाउन होते ही जैसे हमारा स्कूल के साथ संबंध टूट गया और हम अपने माता-पिता के कामकाज में बिजी हो गए। इसी कड़ी में जब बच्चों से पढ़ाई लिखाई से संबंधित सवाल किए गए तो उनका कहना था कि छह-सात महीने से लगातार स्कूल ना जाने के कारण हम पिछले पढ़े हुए सभी पाठ्यक्रम भूल गए हैं तो कई ऐसे नाबालिग बच्चियां जिनका कहना था कि हमें स्कूल के अंदर सेनेटरी पैड वह अलग-अलग सप्ताह में मिला करते थे वह अब बंद हो गया है और स्कूल के तरफ से हमें कोई कांटेक्ट नहीं किया गया है। हम अपने देसी उपाय से अपने शारीरिक देखरेख करते हैं। हम घरो उपायों का उपयोग करते हैं। इस बारे में हम बात करने में इसलिए हिचकते हैं

शेष पृष्ठ 2 पर

कर्ज के तले दबे बच्चों के परिवार की पीड़ा

रिपोर्टर संगीता लखनऊ

बालकनामा के पत्रकार द्वारा बच्चों के साथ पत्रकार बैठक का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 30 बच्चों ने भाग लिया इस बैठक में सामाजिक दूरी का ध्यान रखते हुए बच्चों ने प्रॉपर मास्क पहने थे। मीटिंग का आयोजन विनायकपुरम बसी एक बस्ती मे किया गया। विनायकपुर में ज्यादातर बच्चे झुग्गी झोपड़ी डालकर अपना जीवन यापन करते हैं। एवं छोटे छोटे बच्चे अलग-अलग कामों में लिप्त हैं। पत्रकार बैठक के माध्यम से रिपोर्टर को यह जानकारी मिली कि कोरोना महामारी से ग्रस्त गरीब परिवार इस समय बेहद परेशान हैं। मीटिंग के दौरान 14 वर्षीय कन्हैया ने बताया कि इस कोरोना महामारी के कारण हम लोग बहुत ही अलग-अलग समस्याओं का सामना कर रहे हैं क्योंकि हमारे परिवार में सिर्फ एक ही जना थोड़ा बहुत काम करके घर का खर्चा चला लेता है। बावजूद इसके हमारे सामने बहुत से कड़ी चुनौतियां हैं। जिसकी वजह से हम बच्चों को भी काम करना पड़ रहा है। हमारे घर में बिल्कुल भी पैसे नहीं हैं। इसलिए हमारे परिवार को खाने पीने की बहुत दिक्कत हो रही है। हमारे घर में मेरे छोटे छोटे भाई बहनों का पालन पोषण भी नहीं हो पा रहा है क्योंकि घर में सिर्फ मेरे पापा ही हैं जो काम कर रहे हैं। इसीलिए वह अकेले पूरा घर का खर्चा नहीं उठा पा रहे हैं उन्हें आमदनी भी बहुत कम मिलती है जिससे हमारे खाने पीने का इंतजाम भी बहुत मुश्किल से हो पा रहा है। कृष्णा ने यह भी बताया कि जब से कोरोना महामारी फैली है तब से उनके

पापा ने उधार कर्ज लेकर उनके घर का खर्चा चलाया था और अपने कमरे का किराया दे दिया था लेकिन अब सभी लोग एक के बाद एक अपना पैसा मांगने में लगे हैं जिस वजह से मेरे पापा बहुत परेशान हैं। इसलिए वह अकेले सबका कर्ज नहीं दे पा रहे हैं।

कृष्णा ने बताया कि घर का बिजली का बिल का भी भुगतान करना है। अपने कमरे का किराया भी देना है। साथ ही साथ हमें पेट भर खाना भी खाना है। पानी का बिल भी देना है। इसके अलावा जो हम बच्चों की छोटी-छोटी निजी जरूरत है वह भी पूरी करना है। जिसके कारण से बच्चों और उनके अभिभावकों को भी बहुत ही समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है और हमारे मम्मी पापा को यह नहीं समझ आ रहा है कि वह घर का खर्चा चलाएं या बिजली का बिल दे की हम बच्चों की खाने की समस्या का समाधान करें यह सारी बातें सोच कर बच्चे और उनके अभिभावक बहुत ही परेशान रहते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

स्वस्थ रहना है जरूरी

रिपोर्टर संगीता लखनऊ

लखनऊ की एक बस्ती डालीगंज मैं ऑनलाइन फोन के माध्यम से सपोर्ट ग्रुप मीटिंग करवाई गई जिसका उद्देश्य था बच्चों का स्वास्थ्य और हाथ धोने के महत्व पत्रकार संगीता ने बच्चों को बताया कि अच्छा स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है और इसकी देखभाल के लिए और रोगाणुओं के प्रसार को कम करने के लिए संक्रमण को रोकने के लिए नियमित रूप से बार-बार हाथ धोना बहुत जरूरी है ताकि हम संक्रमण से बच सकें इससे हमें कोविड-19 महामारी से लड़ने में मदद मिलेगी कोरोना जैसी महामारी में हाथ धोने का महत्व बढ़ जाता है इसलिए आप हाथों को अच्छी तरीके से समय-समय पर धोते रहें ताकि बीमारियों से बचाव हो संगीता ने कहा साथियों इस कोरोना महामारी से बचने के लिए बार-बार हाथ धोना बेहद जरूरी हो चुका है। इसीलिए हमें हमेशा यह ध्यान रखना बेहद जरूरी है कि जब भी हम बाहर जाएं तो मास्क पहनकर जरूर जाएं यदि जब भी बाहर से आए तो किसी भी साबुन से अपने हाथों को नियमित अंतराल पर धोते रहें ताकि आप बीमारियों से बच सकें और आपका स्वास्थ्य अच्छा रहे अच्छे स्वास्थ्य के लिए हाथों को धोना बहुत जरूरी है यह गतिविधि करने से आपके हाथ संक्रमण मुक्त हो जाते हैं और आप कुछ भी खाते हैं तो कोई भी रोगाणु आपके शरीर के अंदर वेस्ट नहीं कर सकता है संगीता ने बच्चों को बताया कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप लोग फल और सब्जियां अच्छे से धोकर खाएं ताजा खाना ही खाएं साफ पानी पिए, घर के आस-पास घर के अंदर सफाई रखें, सड़ा- गला खाना ना खाएं खाने को ढक कर रखें एवं ढक कर पकाये।

रद्दी पेपर के काम में लिप्त हुए स्कूल जाने वाले बच्चे

बालकनामा रिपोटर,संगीता
बातूनी रिपोर्टर आशीष

आइए जानते हैं लखनऊ की लव कुश नगर में रहने वाले बच्चों के हालात लवकुश नगर में रहने वाले ज्यादातर बच्चे रद्दी पेपर और कबाड़े का काम करते हैं। इनमें से कुछ बच्चे ऐसे हैं जिनका हाल ही में स्कूल में दाखिला कराया गया था लेकिन कोविड-19 की वजह से इन बच्चों के परिवारों की हालत बेहद खराब हो चुकी है। इन बच्चों के माता-पिता का कामकाज ठप हो गया है जिसकी वजह से यह बच्चे मजबूरी में काम कर रहे हैं। लवकुश नगर में कुछ बच्चे आसाम के रहने वाले हैं। और इनमें से कुछ ऐसे बच्चे भी हैं जो स्कूल भी जाया करते थे लेकिन वर्तमान में यह बच्चे कबाड़ा उठाने का काम कर रहे हैं और कुछ ऐसे बच्चे हैं जो रद्दी पेपर का काम कर रहे हैं। 10 वर्षीय ममता ने बताया

के कुछ बच्चों के परिवार और माता पिता अपने बच्चों से जबरन बाहर का काम करवाते हैं जिससे माता-पिता को दो पैसे की मदद मिल सके और घर का खर्चा चलाने में आसानी हो। रिपोर्टर संगीता ने जब बच्चों से और खुलकर बातचीत की तो बच्चों ने बताया कि लवकुश नगर में रहने वाले बच्चों की स्थिति ज्यादातर ठीक नहीं है क्योंकि यहां के अधिकतर बच्चे अब अलग-अलग कामों में व्यस्त हो चुके हैं। कुछ बच्चे कूड़ा बटोरने का काम करने लगे हैं और कुछ बच्चे रद्दी पेपर का काम करने लगे हैं। रद्दी पेपर को पहले बच्चे ठीक करते हैं उसके बाद रद्दी पेपर को बेचने जाते हैं। इसी तरह के हालात और भी बच्चों के हैं जो सारा दिन कूड़ा करकट बटोरते रहते हैं और बेचते हैं जिससे उनका घर का खर्चा चलता है। रिपोर्टर संगीता से 10 वर्षीय परिवर्तित नाम ममता ने अपनी दबी हुई आवाज में यह कहा कि समझ नहीं आता कि हम बच्चों की इस हालत का जिम्मेदार कौन है। हमारे माता पिता? या सरकार है? या बेरोजगारी? या गरीबी? इन सब की सजा हम बच्चों को ही क्यों मिलती है। आखिर हम बच्चों ने किसी का क्या बिगाड़ा है जो इस समय हम बच्चों को इतनी दुविधा में डाला गया है।

भूखे बिलबिलाते बच्चे ऐसे कर रहे हैं जीवन यापन

रिपोर्टर संगीता लखनऊ

बालक नामा की बातूनी रिपोटर संगीता ने फोन द्वारा बस्ती में बच्चों से बात करी तब पता चला कि यहां पर बच्चों और उनके परिवार को खाने पीने की चीजों की समस्या हो रही है कई परिवार ऐसे हैं जिनके पास सब्जी खरीदने के भी पैसे नहीं है और कुछ घरों में कभी-कभी एक टाइम ही खाना बनता है खाने और पैसे

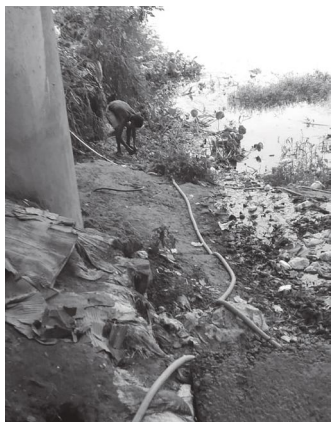

की कमी के कारण ज्यादातर बच्चे मां बाप के कामों में सहयोग कर रहे हैं और कुछ बच्चे नदी के किनारे होने के कारण पेट भरने के लिए सारा दिन मछलियों का शिकार करते हैं ताकि मछलियां खा कर ही पेट भरा जा सके लेकिन यह काम भी बहुत मेहनत का होता है क्योंकि कभी - कभी पूरा दिन मेहनत करने के बाद भी इतनी मछलियां नहीं मिलती है कि पूरे परिवार का पेट भरा जा सके इसीलिए बच्चे आधा पेट खाना खाकर ही सो जाते हैं। 14 वर्षीय सीमा ने बताया के हम बच्चे कट्ठे होकर नदी के किनारे रोज मछलियां पकड़ने जाते हैं इस उम्मीद में कि हमें यदि मछलियां मिल जाएंगे तो हमारे घर में सब्जी का इंतजाम हो जाएगा और आज हम पेट भर कर खाना खा सकेंगे लेकिन जब कभी हमें मछलियां नहीं मिलती हैं उस दिन हमें मजबूरन आधा पेट खाना खाकर सोना पड़ता है या फिर जब थोड़ा बहुत भी खाना घर में नहीं बचता है तो हमें भूखे पेट भी सोना पड़ता है। हमें बहुत दुख होता है जब हम भूखे पेट सोते हैं क्योंकि अगले दिन भूख के मारे हमारे पेट में दर्द होने लगता है जिस कारण हम अगले दिन इस उम्मीद कि मछलियां पकड़ने चल पड़ते हैं कि आज हम शायद पेट भर खाना खा सकेंगे। यदि हमें मछलियां मिल जाये तो। आज हम जरूर अपने घर में मछलियां बना कर पेट भर खाना खा सकेंगे। लेकिन दुख की बात यह है कि हमें कड़ी मेहनत करने के बाद भी बहुत कम संख्या में मछली मिल पाती है जबकि मछली पकड़ने में हमें बहुत समय लग जाता है और बहुत मेहनत भी लगती है। क्योंकि हमारे पास इस समय पैसे भी नहीं है और ना ही कोई काम काज हमारे पास है इसीलिए हम नदी के किनारे हर रोज मछलियां पकड़ने आ जाते हैं और जो भी थोड़ी बहुत मछली मिलती है उसके मुताबिक हम अपने घर में खाना बना कर खा लेते हैं इसी तरह नदी के आसपास रहने वाले बच्चे अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

चूहों से परेशान फुटपाथ पर रहने वाले बच्चे

बातूनी रिपोर्टर सोनू एवं
रिपोर्टर संगीता लखनऊ

चारबाग प्रोटेक्शन पॉइंट के 14 वर्षीय सोनू परिवर्तित नाम ने फुटपाथ पर रहने वाले बच्चों की समस्या के बारे में बताते हुए कहा कि चरबाग प्रोटेक्शन पॉइंट के बच्चों का अभी हाल ही में बड़ी मुश्किल से स्कूल में दाखिला करवाया गया था। बच्चों का स्कूल में दाखिला कराने के बाद उन्हें स्कूल से कुछ किताबें भी दी गई थी जिससे वह अपनी पढ़ाई कर रहे थे। लेकिन बच्चों की स्कूल की किताबें चूहों ने कुतर दी। 10 वर्षीय पूनम परिवर्तित नाम ने अपनी चिंता जताई कि हमारे पास कोई भी सुरक्षित जगह नहीं है। जहां पर हमारा सामान सुरक्षित रह सके। हम बच्चे अपने माता-पिता के साथ फुटपाथ पर ही अपना जीवन यापन करते हैं किसी तरह हमारा स्कूल में दाखिला हो गया था और हम स्कूल जाया करते थे पर जब से ऑनलाइन पढ़ाया हो रही है तब से बच्चे अपने घर पर रहकर ही अपनी पढ़ाई कर रहे थे लेकिन फुटपाथ पर अनगिनत चूहों के कारण हमारी स्कूल की कॉपी किताब उन्होंने कुतर डाली इस वजह से हम बच्चे ना तो स्कूल का काम कर पा रहे हैं और ना ही स्कूल की पढ़ाई कर पा रहे हैं हमारा कोई भी सामान यहां पर

सुरक्षित नहीं रहता है यहां तक कि हमारे छोटे छोटे भाई बहनों के सोते समय हाथ पाँव भी चूहे कुतर लेते हैं। इस तरह की समस्या हमारे यहां आए दिन होती रहती है। 12 वर्षीय निशा परिवर्तित नाम ने बताया कि जब वह स्कूल में किताब लेने के लिए गई और उसने अपनी समस्या अपने अध्यापक को बताई तो अध्यापक ने निशा से कहा कि स्कूल से सिर्फ एक ही बार किताबे मिलती हैं जिसे आप को संभाल कर रखना होता है दोबारा आपको किताबें नहीं दी जाएंगी। यह बात सुनकर वह बहुत निशा बहुत परेशान है उसे यह चिंता सताए जा रही है कि अब वह कैसे अपने स्कूल की किताबों का इंतजाम करेगी और कैसे वह पढ़ाई करेगी।। इन चूहों की वजह से कॉपी-किताब, कपड़े, खाद्य पदार्थ जैसा कुछ भी सामान नहीं बचता है चूहे इन सभी सामान को नष्ट कर देते हैं। हमें आए दिन इसी तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता ह। हमारे पास कोई ऐसी सुरक्षित जगह भी नहीं है जहां हम अपना सामान सही सुरक्षित जगह पर रख सकें यदि हम किसी तरह से अपनी कॉपी किताब का फिर से इंतजाम कर लेते हैं तो चूहे फिर से उन्हें कुतर डालते हैं और नुकसान कर देते हैं।

कैसे सरकारी स्कूलों से मिलने वाली सुविधाओं से महरूम है बच्चे और क्या है उसके नुकसान?

पृष्ठ 1 का शेष

क्योंकि इस बारे में हमसे कोई भी बात नहीं करता है। एवं स्कूल में भी हमें स्नेट्रीपैड देते समय खुलकर जानकारी नहीं दी जाती थी। इसी कड़ी में 12 वर्षीय शहनाज ने बताया की मैं कक्षा 8 की छात्र हूं। मुझे स्कूल से सेनेटरी पैड मिले हैं। इसके मुझे स्कूल से कुछ भी सुविधा प्राप्त नहीं हुई। मुझे कभी वजीफे के पैसे नहीं मिले। 13 वर्षीय सबिना ने बताया की मैं चौथी कक्षा की छात्र हूं। मुझे अभी तक बीते लॉक डाउन के समय से किसी भी प्रकार की स्कूली मदद नहीं मिली। 12 वर्षीय रुबीना कक्षा 5 की छात्र ने बच्ची का नाम = रूबिना ने बताया कि मुझे कॉपी पेंसिल की मदद मिली थी। लेकिन इसके अलावा मुझे और किसी तरह की मदद नहीं मिली। 11 वर्षीय किरण कक्षा 8 की छात्र है ने बताया मुझे किताबें,सेनेटरी पेड की सुविधा लेकिन वजिफे के पैसे नही मिले। वहीं 17 वर्षीय रिंकी कक्षा 11 की छात्र ने बताया कि उसे स्कूल की तरफ से कोई मदद नहीं मिली है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

सामाजिक कार्यकर्ता के सहयोग से रहीम कर रहा है पढ़ाई

रवि

लॉकडाउन भले ही खत्म हो गया हो लेकिन बच्चों की परेशानियां अभी भी वैसी की वैसी ही है। बल्कि अब सड़क एवं कामकाजी बच्चों के जीवन में कुछ नए तरह की दिक्कतों ने भी जन्म ले लिया है। जिसमें से एक समस्या बेहद समान्य होती जा रही है। काफी बच्चों के पास स्मार्टफोन का ना होना उनकी पढ़ाई के बीच में बहुत बड़ी परेशानी का कारण बन गया है। जिसकी वजह से वह होमवर्क नहीं कर पाते। अगर बच्चे होमवर्क कर भी लें तो वह अपने टीचर को नहीं दिखा पाते। इस वजह से बच्चे यह पता नहीं कर पा रहे हैं कि उन्होंने होमवर्क सही किया है या गलत साथ ही कई दफा कुछ पढ़ाई की चीजें ऐसी होती है। जिन्हें समझने के लिए वीडियो के माध्यम से पढ़ाई करना जरूरी होता है। और बच्चों के पास स्मार्टफोन ना होने की वजह से बच्चे वह भी नहीं कर पा रहे हैं। बरहाल यह तो थी स्मार्टफोन ना होने की वजह से बच्चों को पढ़ाई में आ रही परेशानियां लेकिन तब क्या हो जब किसी के घर में एक ही कीपैड वाला मोबाइल हो और वह भी उसके अभिभावक अपने काम पर लेकर चले जाएं। या फिर फोन ही ना हो। जी हां बिल्कुल सही सुना आपने अब हम आपको एक ऐसे ही बच्चे के बारे में बताते हैं। जिसका नाम रहीम है। 4 साल पहले रहीम के पिताजी की अधिक नशा करने की वजह से मृत्यु हो गई थी। उसके बाद रहीम के

परिवार की जिम्मेदारी उसकी माताजी पर आ गई। रहीम की माता जी काफी बुजुर्ग हैं। लेकिन बावजूद इसके वह कोठियों में काम काज करके अपने परिवार का पालन पोषण करती है। रहीम के परिवार में तीन बहन और दो भाई एवं माताजी है। रहीम और उसका परिवार सराय काले खां में किराए के एक कमरे में रहते हैं। रहीम सारा दिन अपने घर पर ही रहता है।पहले वह स्टेशन पर कबाड़ा चुनता था। तो उस दौरान वह पढ़ाई करने पाइंट पर आ जाता था।और वर्तमान में वह फोन ना होने की वजह से संस्था द्वारा आनलाइन करवाई जाने वाली अधिकतर गतिविधियों से वंचित रह जाता है। जब भी कार्यकर्ता फील्ड विजिट पर जाता है। तब जाकर रहीम को होमवर्क देता है। और तभी जाकर उसका होमवर्क चेक भी करता है। वैसे तो रहीम पढ़ने लिखने में काफी होशियार है। लेकिन जब से लॉकडाउन शुरू हुआ था। तब से उस बच्चे से बहुत ही कम संपर्क हो पाया है। जिसका कारण है। उनके परिवार में फोन का ना होना। जिस वजह से वह अपनी पढ़ाई भी नहीं कर पाता है। लेकिन अब संस्था के कार्यकर्ता रहीम से समय समय पर मुलाकात कर उसकी पढ़ाई करने में सहयोग दे रहे हैं। इस प्रकार रहीम अपनी पढ़ाई कर रहा है।

कैसे किया जा रहा है बच्चों का इस्तेमाल

रवि

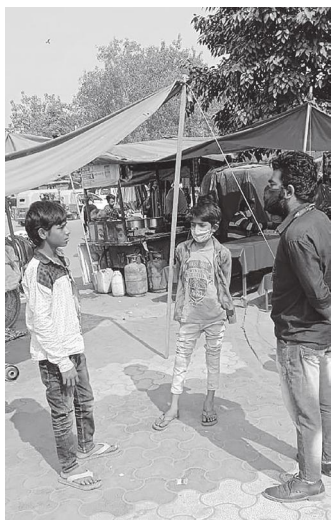

वैसे तो सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अक्सर ही कुछ लोग फायदा उठाते हैं। लेकिन आज हम जिस विषय के बारे में बता रहे हैं। वह विषय उन लोगों से जुड़ा हुआ है। जिन लोगों की बिल्डिंगों में यह बच्चे और इनका परिवार किराए के कमरों में रहता हैं। यह खबर सराय काले खां में रहने वाले कुछ बच्चों की है। जिनकी उम्र लगभग 12 से 14 साल के बीच में है। आजकल कोरोनावायरस की वजह से स्टेशनों पर ट्रेनें आना बहुत ही कम हो गई है। इस वजह से इन बच्चों का स्टेशन पर कबाड़ा चुनने का काम भी ठप हो गया है। यह बच्चे सारा दिन अपने किराए के एक छोटे से कमरे में ही समय बिताने के लिए मजबूर हैं। अब उनकी बिल्डिंगों के मालिकों ने उन बच्चों को उसी बिल्डिंग में ही एक ऐसा अजीब काम दिया

है जिसकी वजह से यह बच्चे भविष्य में किसी भी परेशानी में आ सकते हैं।जी हां मकान मालिकों ने उन बच्चों को बिल्डिंग के अंदर रहने वाले अन्य लोगों की मुखबरी के कामों पर रख लिया है। कार्यकर्ता ने बच्चों से मिलकर इस विषय पर जानने की कोशिश की तो बच्चों ने बताया कि उनके बिल्डिंग के मालिक ने बिल्डिंग की जिम्मेदारी उन्हें दे दी है। बिल्डिंग का अब उन्हें ध्यान रखना है। कौन आता है। कौन जाता है। कौन क्या करता है। लोगों की मुखबरी करना बच्चों को काफी नुकसानदायक हो सकता है। साथ ही बच्चों ने बताया कि उनके मकान मालिक ने उन्हें बिल्डिंग का सुपरवाइजर बना दिया है। जब कार्यकर्ता ने बच्चों से इस काम के पैसों की बात की तो उन्होंने कहा कि अभी फाइनल नहीं हुआ है। लेकिन वह पैसे भी देंगे। फिर कार्यकर्ता ने बच्चों को समझाया कि यह सब गलत बात होती है। क्योंकि आप किसी की कोई शिकायत करोगे तो यह भी हो सकता है। कि भविष्य में वह आप लोगों को कोई नुकसान पहुंचा दे।

परिस्थिति ने निकाला बच्चों का भय

रिपोर्टर शम्भू

अभी हाल ही में एक खबर मिली इस लोकडाउन महामारी के कारण कई परिवार ऐसे हैं जिनको काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है सुनने में आया है कि अनलॉकडाउन होने के बावजूद भी किसी को पहले तरह काम नहीं मिला है जिस प्रकार लोकडाउन से पहले करते थे । अभी भी माता-पिता काम के लिए दर-दर भटकते हैं । लेकिन दुख की बात यह हैं की माता-पिता की परेशानी अब बच्चों को भी झेलना पड़ रहा है घर की स्थिति इतना खराब हो गई है कि उनके पास इतना पैसा नहीं है की गैस खरीद कर खाना-पीना बना सकें इसीलिए माता-पिता अपने मासूम बच्चों को जंगल भेजते है और बच्चों को बोलते हैं कि जंगल से जाकर लकड़ियां लेकर आए ताकि माता-पिता चूल्हे पर खाना बना सकें । 12 वर्षीय परिवर्तित नाम राहुल से बातचीत करने पर पता चला कि भूतकाल में जब बच्चे लक्कड़ तोड़ने के लिए जाते थे जंगल में बहुत भय लगता था क्योंकि उस जंगल में तरह-तरह के जहरीले जानवर भी पाए जाते हैं जैसे सांप जिसकी वजह से बच्चे डर जाते थे लेकिन यह मासूम बच्चे भी क्या करें अगर यह बच्चे लकड़ियां तोड़कर नहीं लाएंगे तो इनके माता-पिता खाना कैसे बना पाएंगे इसीलिए मासूम बच्चे

अपनी हिम्मत जटा कर लकड़ियां तोड़ कर लाते थे लेकिन वर्तमान में कुछ बच्चे ऐसे हैं जो बिल्कुल भी नहीं डरते हैं क्योंकि बच्चों के मन से डर निकल गया है । बच्चों का कहना है कि पहले हमें डर लगता था लेकिन अब डर नहीं लगता है क्योंकि हमें पता है कि अगर हम लकड़ियां तोड़कर नहीं ले जाएंगे तो हमें भूखे ही रहना पड़ेगा इसलिए हम हिम्मत जुटाकर खाना पकाने के लिए लकड़ियां तोड़कर लेकर आते हैं। उसके बाद ही हमारे माता-पिता चूल्हे पर हमें खाना बनाते हैं। 9 वर्षीय नंदिनी परिवर्तित नाम ने अपनी बात रखते हुए कहा की उज्ज्वला गैस योजना (ढ१ँल्ल टल्ल३१ ब्र६ँ ड्ढल्ल) के तहत हम गरीब ग्रामीण परिवारों को मुफ्त गैस सिलेंडर मुहैया कराती है। लेकिन हम बच्चों के परिवारों को इस तरह की योजना का लाभ हमें कोरोना का के समय भी मुहैया नहीं कराई गई। इस कारण अब हमें मजबूरन पैसा ना होने की वजह से चूल्हा पर अपना खाना बनाना पड़ रहा है। 12 वर्षीय रोशनी परिवर्तित नाम की अपील है कि हम बच्चों के घरों में भी गैस की सुविधा मुहैया कराई जाए। ताकि ह'मारे माता-पिता भी गैस चूल्हे पर खाना बना सके और हमें इस तरह जंगलो में जंगली जानवरों के बीच दर-दर भटकना न पड़े ।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

40 बच्चों ने प्राप्त की आत्मरक्षा कार्यशाला

रवि

वर्तमान हालातों को देखते हुए चेतना संस्था द्वारा खासकर उन बालिकाओं के लिए जो झुग्गी झोपड़ी व कच्चे पक्के मकान में रहते हैं आप सभी तो जानते हैं इनका दिनचर्या कैसे होता हैं हालांकि कोरोना काल की वजह से यह लोग अधिकतर समय अपने घर में रहते हैं लेकिन भूतकाल में यह लोग कामकाज के लिए या घर के कामकाज के लिए बाहर अवश्य ही जाते हैं जिस रास्ते से यह लोग कामकाज करने के लिए जाते हैं वहां पर काफी सन्नाटा भी होता है ऐसे परिस्थिति से सुरक्षा पाने के लिए यह महत्वपूर्ण आत्मरक्षा ट्रेनिंग दिया गया इसमें 40 लड़कियों ने भाग लिया और डिजिटल क्लास के द्वारा इन लड़कियों को आत्मरक्षा के बारे में सिखाया गया ताकि यह लड़कियां आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकें इनमें वह जज्बा भरा ताकि यह हर कठिनाइयों का सामना कर सकें । आत्मरक्षा ट्रेनिंग के दौरान बालिकाओं को कुछ विशेष स्टेप बताया गया जैसे लोवर पंच कैसे मारना है । विस्तार पूर्वक स्टेप के बारे में बताया गया किस प्रकार और किस तरह से समय आने पर इस स्टेप को प्रयोग करने के बाद अपने आप को रक्षा कर सकते हैं । आत्मरक्षा ट्रेनिंग प्राप्त करने के बाद कुछ बालिकाओं से बातचीत किया गया जिसमें से 14 वर्षीय परिवर्तित नाम राधिका ने बताया कि पहले हमें बिल्कुल भी इस चीज के बारे में ज्ञात नहीं था आत्मरक्षा भी कोई ट्रेनिंग होती है लेकिन आज हमने सीखा कि हमें अपनी स्वयं रक्षा किस तरीके से करना है हमें बहुत ही खुशी हो रही है की हम अपनी रक्षा खुद से कर सकते हैं। हां बच्चे इस ट्रेनिंग को पाकर बेहद खुश हैं और अपने आप को संतोषजनक महसूस कर रहे हैं हम सड़क और कामकाजी बच्चों के लिए इस तरह की ट्रेनिंग यदि समय समय पर मिलती रहे तो हमारा आत्म बल भी बढ़ता रहेगा। और हम छोटे मोटे क्यों होती हो का सामना कर सकेंगे।

काम नहीं तो कैसे होगी बच्चों की जरूरते पूरी

रिपोर्टर शम्भू

आइए जानते हैं कुछ बच्चों का हाल यह वह बच्चे हैं जो रोजमर्रा के जीवन में अपना जीवन यापन करते हैं और रोज की थोड़ी बहुत आमदनी होने पर ही अपना खाना भरपेट खा पाते हैं बालकनामा की टीम ने इस बात का जायजा लेने हेतु कि इस समय यह बच्चे अपने खाने-पीने का इंतजाम और अपनी निजी जरूरतों को कैसे पूरा कर रहे हैं जबकि इनके पास कोई भी कार्य करने के लिए नहीं है जिससे वह अपने लिए दो वक्त की रोटी का इंतजाम कर सकें। और घर पर खाना खा सके। लेकिन यह बच्चे फिर भी प्रयास कर रहे हैं और खुद ही अपना घर का गुजारा करने के लिए कुछ ना कुछ काम कर रहे हैं जैसे कि कुछ बच्चे फूल बेचने का कार्य कर रहे हैं। कुछ बच्चों ने बताया की इस समय हमें और हमारे

मां-बाप को कोई काम नहीं मिल रहा है इसलिए हमने खुद ही छोटा-मोटा काम करना शुरू कर दिया है जैसे कि यह बच्चे नवरात्रों में फूल बेचने का कार्य कर रहे थे और अब नवरात्रे भी निकल गए लेकिन इनके वह फूल भी नहीं बिके और उन फूलों को लेकर यह बच्चे जगह-जगह लेकर बेचने के लिए भटक रहे हैं। बच्चों ने जो नवरात्रि के लिए फूल का कार्य शुरू किया था उस काम में उन्हे बेहद नुकसान हो गया,फूलों की दुकानदारी भी नहीं हुई। इन बच्चों ने फिर दिवाली के अवसर पर दिवाली के सभी सामग्री लेकर आए और उसको बेचना शुरू किया। 14 वर्षीय नंदिनी परिवर्तित नाम ने कहा कि हम बहुत दुखी है क्योंकि हमारा दिवाली का सामान भी किसी ने नहीं खरीदा और उसमें भी हमें भारी नुकसान हो गया साथ ही साथ हमारे ऊपर कर्जा हो गया जिसे चुकाने के लिए हम बहुत परेशान हैं जो भी हम छोटा-मोटा कार्य करने की सोचते हैं हमें इसी प्रकार नुकसान हो जाता है और कोई भी व्यक्ति हमसे सामान नहीं लेता। हम बच्चे इसी प्रकार अलग-अलग त्यौहार आने पर अलग-अलग कार्य करते हैं पर इस कोरोना महामारी की वजह से इस बार हमें बेहद नुकसान हो रहा है एक तरफ हमें कोई काम देने को तैयार नहीं और दूसरी ओर जब हम अपना कोई काम करने की सोचते हैं तो उसमें भी हमें बेहद नुकसान हो रहा है इसीलिए हमारे माता-पिता और हमारे ऊपर कर्ज पर कर्ज बढ़ता ही जा रहा है। इस वजह से बच्चों को बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है हम बच्चों की गुहार है कि हम बच्चे भीख नहीं मांग रहे पर हमारा जो सामान है वह सामान व्यक्ति हमसे खरीदे जिससे हमारा नुकसान ना हो। ऐसा करने पर हम बच्चों को दो वक्त की रोटी नसीब होगी

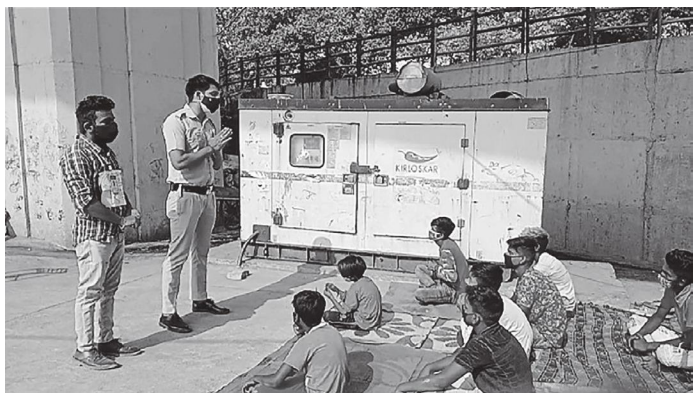

दिल्ली पुलिस ने कोरोना वायरस से बचने हेतु बच्चों को दी शिक्षा

रवि

आज निजामुद्दीन स्टेशन पर काम करने वाले बच्चों को चेतना संस्था के सहयोग से दिल्ली पुलिस की तरफ से कोरोनावायरस से बचाव के विषय के बारे में बच्चों को जागरूक किया गया। जिसके दौरान सभी बच्चों से एक-एक करके पूछा गया कि वह कोरोनावायरस से बचाव किस प्रकार से कर रहे हैं। साथ ही यह भी जानने की कोशिश की गई कि बच्चों को कोरोना वायरस से बचाव के विषय में कितनी जानकारी है। इसके साथ ही बच्चों को यह भी बताया गया कि अगर आपको कोरोनावायरस है। तो उसके लक्षण किस प्रकार से नजर आते हैं। और किस प्रकार की तकलीफें होने लगती हैं। इस तरह की तखलीफ होने पर तुरंत अपने आपको अस्पताल में दिखाना बहुत जरूरी होता है। और इस बिमारी से बचने के लिए जब भी आप घर से बाहर जाएं तो ध्यान रहे मास्क लगाकर जाएं। बाहर किसी भी चीज को ना छुएं अपने आसपास के व्यक्तियों से 6 फीट यानी कि 2 मीटर की दूरी बनाए रखें अगर आपको किसी व्यक्ति पर यह संधय है।या उस व्यक्ति में आपको उपलिखित कोरोनावायरस के लक्षण नजर आते हैं तो उस व्यक्ति से दूरी बनाए रखें। साथ ही किसी भी व्यक्ति से छू कर बात ना करें और एक दूसरे से हाथ ना मिलाए।समय समय पर साबुन से जरूर हाथ धोये।

बच्चों के प्रति बढ़ता भेदभाव

रिपोर्टर शम्भू

नोएडा की अधिकतर लाल बत्ती पर देखा गया है कि जो बच्चे भीख मांगने का काम करते हैं उन बच्चों को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि बच्चों के साथ इस समय बहुत भेदभाव किया जा रहा है। बच्चों के साथ इस तरह का भेदभाव पहले कभी नहीं किया गया जैसे इस समय किया जा रहा है। बच्चे जैसे ही किसी व्यक्ति के पास पैसे मांगने के लिए जाते हैं तो लोग उन बच्चों से बोलते हैं कि तुम हम से दूर रहो । 9 वर्षीय परिवर्तित नाम राजू से पता चला कि जब कोरोना काल नहीं था तो उस वक्त इतनी परेशानी नहीं होती थी। परंतु इस समय बहुत ज्यादा बदसलूकी हम बच्चों के साथ की जा रही है। कोरोना महामारी की वजह से लोग हमसे और भी ज्यादा ग्रहणा करने लगे हैं। हमें अपने आसपास भी खड़े होने नहीं देते। कोई कोई व्यक्ति तो हमें देखते ही कहते हैं कि इन बच्चों की गंदगी की वजह से ही अलग-अलग प्रकार की बीमारियां हो रही हैं।जो राहगीर व्यक्ति होते हैं वह हमारे गंदे कपड़ों को देखकर हमें खरी खोटी सुनाते हैं। कोई भी व्यक्ति हमसे अब काम करवाना भी नहीं चाहता। नाहीं कोई हमें छोटा मोटा काम दे रहा है। हम बच्चों को कम दिहाड़ी पर भी काम नहीं मिल रहा है। सभी लोग इस

कोरोनावायरस की वजह से हम से दूर भाग रहे हैं और हमें अपने पास तक नहीं आने दे रहे हैं। इस समस्या की वजह से हमें काम भी नहीं मिल पा रहा है और ना ही हमारा घर का पालन पोषण हो पा रहा है। जब बच्चों को काम नहीं मिला तो हम भीख मांगने का काम करने लगे पर लोगों का बच्चों के प्रति बढ़ता भेदभाव की वजह से उन्हें भिक्षा भी नहीं मिल रही है 13 वर्षीय परिवर्तित नाम पायल ने कहा कि यदि ज्यादा दिन तक ऐसे ही हालात रहे तो हम कामकाजी बच्चों को लिए दिन पर दिन परेशानी ओर बढ़ जाएंगी और हमारे घरो के चूल्हे जलना बंद हो जायेंगे। बच्चों के विनती है कि हम बच्चों से भेदभाव ना किया जाए।

भरपेट खाना ना मिलने पर बच्चों का बिगड़ा स्वास्थ्य

ज्योति

सपोर्ट ग्रुप मीटिंग कराने के दौरान बच्चों ने अपनी-अपनी समस्याएं रखी आइए जानते हैं बच्चों की समस्याएं जिसमें बच्चों ने बताया की हमारे माता पिता कोठी पर काम करने जाते थे लेकिन जब से लॉकडाउन लगा था तब से अब तक हमारे माता पिता को दोबारा कोठी पर काम उस प्रकार नहीं मिल रहा हैं जैसे पहले मिल जाता था, पहले हमारे माता पिता को 3 से 4 कोठियों में काम मिल जाता था। लेकिन अब मुश्किल से 1 कोठी में काम मिल पा रहे है जिसकी वजह से घर का खर्चा निकालना बहुत मुश्किल हो रहा हैं । ऐसे स्थिती में हमारे माता-पिता ने कई अलग अलग जगह की कोठियों में काम खोजना शुरू किया है। लेकिन कोई

काम देने को तैयार नहीं हुए । 14 वर्षीय सुमित परिवर्तित नाम ने बताया कि जिन बच्चों के माता-पिता के पास स्मार्टफोन नहीं होता है उनको काम पर रखते ही नहीं हैं क्योंकि फोन में आरोग्य सेतु एप्प रखना अनिवार्य कर दिया गया है। इस ऐप के माध्यम से यह पता चलता है कि हमारे आसपास कोरोना के मरीज को उपलब्ध है या नहीं।इसलिए कोठी को ठीक है मालिक स्मार्टफोन रखने वालों को ही काम दे रहे हैं और जिन माता-पिता के पास स्मार्टफोन नहीं है पर उन्हें काम पर नहीं रख रहे हैं। इसीलिए अधिकतर बच्चों के माता-पिता घर पर ही अपना समय व्यतीत कर रहे हैं। यह एक बड़ी समस्या है जिस वजह से हमारे माता-पिता को कोई कामकाज नहीं मिल पा रहा है इसलिए बच्चों को सबसे ज्यादा दिक्कतो का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि माता-पिता काम पर नहीं जा पा रहे हैं तो वह अपने घरेलू खर्चा भी नहीं निकाल पा रहे हैं बच्चों द्वारा सूचना मिला की इस करोना काल में बच्चों के स्वास्थ्य में भी काफी बदलाव आए हैं बच्चे काफी कमजोर भी दिखने लगे हैं उनके वस्त्र जो पहले साफ सुथरा होते थे वही वस्त्र अब गंदे दिख रहे हैं क्योंकि उनके पास पैसे नहीं है। जिससे बच्चे अपने कपड़े धोकर फिरसे इस्तेमाल कर सके। बच्चो को चेहरे पर उदासी छाई हुई है । और बच्चो ने बताया की पहले जब हमारे माता-पिता का काम अच्छे से चलता था हम लोग झुग्गी का किराया झुग्गी के मालिक को आसानी से दे दिया करते थे लेकिन अब हमारे माता पिता को कोई काम नहीं मिल रहा है जिसकी वजह से हम बच्चों को समय से खाना नहीं मिल पा रहा है। इसका सीधा असर बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ रहे बच्चे कमजोर होते जा रहे हैं क्यूंकि बच्चों को भरपेट खाना नहीं मिल रहा है इसलिए बच्चे बीमार होने लगे हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

खेल खिलौने बेचने वाले बच्चे हैं परेशान

रवि

बालकनामा के जब पत्रकार ने दक्षिणी दिल्ली के स्थानों पर अलग-अलग मार्केट में काम करने वाले बच्चों से मुलाकात करके उनसे बातचीत की और उनकी परेशानी के ऊपर चर्चा की तब 14 वर्षीय मां का परिवर्तित नाम ने बताया की भैया दिवाली का सीजन चल रहा है और हम लोगों का इस वक्त बहुत अच्छे से काम चलता था लेकिन इस बार कोरोना वायरस की वजह से हमारा काम बिल्कुल खत्म हो गया है। साथ ही साथ मार्केट में लोगों का रवैया भी हमारे प्रति बदलता जा रहा है वह बहुत ज्यादा ही हम को देखकर दूरी बनाते हैं और अक्सर पुलिस वाले भी आकर हमें खिलौने गुब्बारे या दिवाली का अन्य सामान को बेचने के लिए मना कर रहे हैं लेकिन इन लोगों को अब कौन समझाएगा की जब तक हम कमाएंगे नहीं तब तक हम खाएंगे नहीं। 13 वर्षीय बबली परिवर्तित नाम ने बताया कि इस बार हमें लग रहा है कि हमारी दिवाली सूनी रह जाएगी। इसी कड़ी में

नव वर्ष नंदिता परिवर्तित नाम बताया कि मैं पश्चिमी दिल्ली में अलग-अलग बाजार में जाकर अपने खेल खिलौने बेचने जाती हूं साथ में मेरे छोटे भाई बहन भी खेल खिलौने बेचने जाते हैं मेरे पिताजी की मृत्यु हो गई है और मेरी माता जी बहुत बीमार रहती हैं इसीलिए हम भाई बहनों को ही काम करना पड़ता है। इसी तरह हम अपने घर का खर्चा चला रहे हैं और अपनी मां का ध्यान रखते हैं। लेकिन उस समय हम बहुत परेशान हो गए हैं क्योंकि अगर हम शाम को कम हम पैसे लेकर घर जाते हैं तो मां- और अपने लिए हम भोजन भी नहीं बना पाते हैं इतने कम पैसों में भोजन नहीं बन पाता है। इसी कड़ी में 10 वर्षीय नेहा परिवर्तित नाम ने बताया कि यदि जिस दिन हम अपने खेल खिलौने नहीं बेच पाते हैं हम पूरे दिन मार्केट में घूमते रहते हैं कि हमारा सामान बिक जाए लेकिन हमारा सामान कोई खरीदना को तैयार नहीं होता और हमें वापस घर खाली हाथ लौट कर आना पड़ता है इस वजह से माता-पिता भी हमें बहुत बुरी तरह डांटते हैं और खाना भी नहीं देते हमारे माता-पिता हमें इसलिए डांटते है क्योंकि हम अपना रोज का किराया भी नहीं निकाल पा रहे हैं और घर से ही पैसा खर्च होता जा रहा है जबकि एक भी सामान हमारा मार्केट में नहीं बिक पा रहा है बच्चे बेहद दुखी हैं कि आखिर किस प्रकार हम अपना सामान बेचकर दो पैसे कमा कर अपना जीवन यापन करे?

ठंड से बचने के लिए करते हैं नशे का सेवन

रवि

नोएडा के स्थान पर जब बालकनामा के पत्रकार ने विजिट किया तो बच्चों ने बताया कि नोएडा सेक्टर 18 में रहने वाले बच्चे अधिकतम नशे के चंगुल में फंसते जा रहे हैं बच्चे एक दूसरे को देखकर ज्यादातर नशा सीख रहे हैं और वह बच्चे अपने घर बहुत कम जाते हैं यह बच्चा कहीं पर भी सो जाते हैं 14 वर्षीय शाहरुख परिवर्तित नाम ने बताया जब किसी बच्चे से पैसे मांगते हैं या नशा मांगते हैं यदि बच्चे नशा देने से मना कर देते हैं तो वह आपस में लड़ाई झगड़ा करने लगते हैं।

एक दूसरे से मारपीट करते हैं इसी के कारण काफी बच्चे हैं बिगड़ चुके हैं। और यह बच्चे ठंड में रात भर इधर-उधर सो जाते हैं इस वजह से इनको बहुत ठंड लगती है और यह उसी प्रकार से नशा करते हैं जिससे इन बच्चों को

ठंड ना लगे और यह ठंड बर्दाश्त कर सके। बालकनामा पत्रकार ने बच्चों से इस विषय पर बातचीत की समझाया कि आप सभी अपने घर जाएं और ठंड में बाहर ना सोए। यदि आप ठंड के समय में बाहर जाएंगे तो आप बीमार पड़ सकते हैं आप ठंड से बचने के लिए अलग-अलग प्रकार का नशा करते हैं जो आपके जीवन के लिए घातक हो सकता है।

कचरा बना बीमारी का कारण

रिपोर्टर आंचल लखनऊ

लखनऊ की बालक नामा रिपोर्टर आंचल ने विनायक पुरम कम्युनिटी के बच्चों से बातचीत की और बच्चों की समस्या जानने की कोशिश की तो बच्चों ने बताया कि जहां पर हम रहते हैं उसी के थोड़े बगल में कूड़े की गाड़ी आती है और पूरा डाल कर चली जाती है जब वह कूड़ा इकट्ठा हो जाता है ढेर सारा हो जाता है तो फिर उसको जला दिया जाता है उस कूड़े के जलने पर जो उसका धुआ निकलता है वह सारा जहां पर हम रहते हैं वहां झोपड़ियों में फैल जाता है और बहुत ही गंदी बदबू आती है जिससे सांस लेने में हमें बहुत ही दिक्कत होने लगती है फिर उसी तरह करते हैं की कूड़ा वाली गाड़ी आती है और कूड़ा डाल कर चली जाती है और जब कूड़ा ढेर सारा हो जाता है फिर उसी तरह कूड़े को जला दिया जाता है और वहां के लोग कोई कुछ नहीं कहता है कि आप लोग यहां पर कूड़ा डाल कर क्यों चले जाते हो और उसी में हमारे भाई बहन भी कभी-कभी जाकर उसमें खेलने लगते हैं उस कूड़े में जिससे हमारे भाई बहनों का स्वास्थ्य खराब भी हो सकता है

बालिकाओं को किया जागरूक

पूनम

नारी सशक्तिकरण कार्यक्रम के दौरान महिला और बालिकाओं को मान सम्मान के प्रति जागरूक किया बालकनामा की पत्रकार ने बालिकाओं को बताया कि अब हम लड़कियों के साथ हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाएंगे और अपने हक के लिए लड़ेंगे बालकनामा की पत्रकार ने बताया कि आज भी लोग पुरानी बातो को मानते हैं ।

भूतकाल में बाल विवाह का उद्देश अपनी बेटियों को विदेशी आक्रांताओं से बचाना होता था। किंतु वर्तमान में इसकी आवश्यकता नही है। अतः बाल विवाह एक अभिशाप है जिससे बच्चो का मानसिक और शरीरिक विकास पूर्ण रूप से रुक जाता है। हमारे देश मे बाल विवाह को लेकर पहले से कानून है। लेकिन वर्ष 2006 में उक्त कानून में संशोधन करके उसे कड़ा कर दिया गया।

इस अधिनियम की धारा 09 के तहत बाल विवाह कराने वाले व्यक्तियों को 2 वर्ष तक का कारावास या 1 लाख का जुमार्ना अथवा दोनो हो सकते है।

इस अधिनियम में बताया गया है कि बाल विवाह में सम्मलित (बच्चो के माता पिया, रिश्तेदार, पण्डित, टेंट वाला, बैंड वाला आदि) प्रत्येक व्यक्ति के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही होगी। इस कानून में लड़की की आयु 18 तथा लड़के की आयु 21 वर्ष निर्धारित की गई है।

अगर किसी को भी बाल विवाह, बाल शोषण, या बच्चो से सम्बंधित किसी भी समस्या की जानकारी होती है। तो तत्काल चाइल्ड लाइन के टोल फ्री नम्बर 1098 पर सूचना जरूर दें। नारी सशक्तिकरण के इस कार्यक्रम में लगभग 30 बालिकाओं ने यह जानकारी हासिल की कि यदि किसी समाज में बच्चे का साथ बाल विवाह कराया जा रहा हो तो किस तरह से वह बाल विवाह रुकवा सकते हैं।: 14 वर्षीय पूजा ने कहा कि आज से पहले मुझे यह जानकारी नहीं थी कि किस तरह से बाल विवाह रुकवाया जा सकता है लेकिन आज इस नारी सशक्तिकरण कार्यक्रम के दौरान मुझे यह अच्छे से मालूम हो गया है कि बाल विवाह कराना एक कानूनी जुर्म है आज के इस नारी सशक्तिकरण के कार्यक्रम में भाग लेकर मुझे बेहद आत्मनिर्भरता महसूस हो रहा है। मैं दूसरे बच्चों को भी यह जानकारी दूंगी और उन्हें बाल विवाह के प्रति जागरूक करूंगी।

खेलकूद का सामान प्राप्त कर बच्चे हुए खुश

रवि

चेतना संस्था के सहयोग से सराय काले खां में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी के स्वस्थय को ध्यान में रखते हुए उन्हें सेनिटाइजर, स्कीपिंग रोप वितरण की गई। साथ ही बच्चों को यह भी समझाया गया कि वह इन चीजों का किस प्रकार से इस्तेमाल कर सकते हैं।इस दौरान सभी नियमों का पालन करते हुए।उपलिखित सामग्री बच्चों को वितरण की गई।जिसके बाद बच्चों ने स्कीपिंग रोप के साथ खेलते हुए अपनी फोटो खिंचवाई और अपनी खुशी जाहिर की।

स्मार्ट फोन का दुरुपयोग

पूनम आगरा

यह खबर आगरा शहर नगला लाल सिंह क्षेत्र की है पत्रकार ने यहां रहने वाले बच्चों से बातचीत किया और बातचीत के दौरान 13 वर्षीय रुचिका ने बताया कि यहां पर हमारे यहां एक पंचायती है जिसमें सुबह शाम उस पंचायती में बड़े बड़े लड़के और कुछ छोटे लड़के रोज खेलने के लिए आते हैं लेकिन वहां जो बड़े लड़के खेलने आते हैं वह अपने स्मार्टफोन में अश्लील वीडियो देखते हैं साथ ही साथ वह अपने पास छोटे बच्चों को भी बुलाते हैं और उन्हें भी अपने फोन से अश्लील वीडियो दिखाते हैं। अश्लील वीडियो देखने के बाद बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। वह बड़े लड़के इसी तरह आए दिन अपने पास छोटे बच्चों को बुलाकर उन्हें इसी तरह रोज अश्लील वीडियो दिखाते हैं। हालांकि इस बात का अभी पता नहीं चल सका है कि वह अश्लील वीडियो देखने के बाद क्या करते हैं। लेकिन यदि छोटे बच्चों को इसी तरह बड़े लड़के अश्लील वीडियो दिखाते रहेंगे तो यह एक हमारे लिए बहुत चिंता का विषय है। इस प्रकार बच्चे बुरी संगत का शिकार हो रहे हैं। यह संभावना हमेशा बनी रहती है कि कहीं यह बच्चे कोई अपराध न कर बैठे 14 वर्षीय रूपा परिवर्तित नाम ने बताया कि इस बात की बच्चों को भनक तक नहीं है कि उनके छोटे बच्चे खेलने के नाम पर पंचायती के पास बड़े लड़कों के साथ अश्लील वीडियो देखने जाते हैं जब से हम लड़कियों को यह बात पता चली है कि बड़े लड़के छोटे लड़कों को अश्लील वीडियो दिखाते हैं तो हमें उस रास्ते के आसपास से गुजरने से भी डर लगता है हम अपना जरूरी सामान भी नहीं ला पाते हैं और ना ही मार्केट जा पाते हैं क्योंकि जब भी हम उस रास्ते से निकलते हैं तो वह लड़के हमें अश्लील नजरों से देखते हैं।

बाइक रिपेयरिंग की दुकान से मिलते हैं 100 रुपये तब जाकर होता है घर का गुजारा

पूनम आगरा

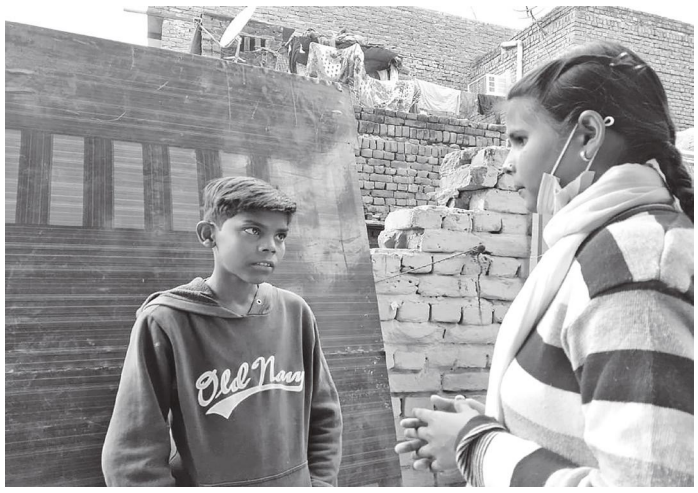

यह खबर आगरा शहर में नई आबादी धनौली क्षेत्र मैं रहने वाला 12 वर्षीय समीर की है। समीर अपने माता पिता के साथ किराए के मकान में रहता है। लॉकडाउन से पहले समीर स्कूल में पढ़ने जाया करता था और समीर के पिता जूते का कार्य करते थे। तब उनका गुजारा अच्छे से हो रहा था, लेकिन जब से लॉकडाउन लगा तब से उसके घर की आर्थिक स्थिति खराब होती चली आ रही है।

समीर ने बताया कि मेरे पिताजी को कोई काम नहीं मिल पा रहा है। इस वजह से हमारे घर का गुजारा बहुत ही मुश्किल से हो पाता है। इसलिए मैंने काम तलाशना शुरू कर दिया है। पर मुझे अब तक कोई काम नहीं मिला। फिर मैं बाइक रिपेयरिंग की दुकान पर काम की बात करने गया, जिससे मुझे उस बाइक वाले भैया ने बताया कि मैं तुम्हें दिन भर मैं लगभग 100 रुपये दिया करूंगा। पूरे दिन का और अगर किसी से शिकायत मिलेगी तो उसमें से पैसे काट लिए जायेंगे। शर्तों पर अब मैं रोज बाइक रिपेयरिंग की दुकान पर काम करने जाता हूं और मुझे जो भी पैसा मिलता है उन पैसों को मैं अपनी माता पिता को दे देता हूं और उन्हीं पैसों से हमारे घर का गुजारा चल रहा है। घर की स्थिति को देखते हुए अब मेरा मन पढ़ने लिखने को नहीं करता। क्योंकि यदि मैं काम नहीं करूंगा तो घर का गुजारा कैसे होगा? घर की स्थिति की वजह से अब मैं कभी पढ़ाई नहीं कर सकूंगा।

दुर्घटना का शिकार होते सड़क एवं कामकाजी बच्चे

रिपोर्टर आंचल लखनऊ

लखनऊ के लवकुशनगर आसामी बस्ती में रहने वाला अंकित नाम का बच्चा जब हमारी बालक नामा रिपोर्टर आंचल ने फोन के माध्यम से वहां के बच्चों से बातचीत की और उनकी समस्या जानने की कोशिश की तो एक अंकित नाम का बच्चा अपनी समस्या बताने लगा कि मैं सड़क पर साइकिल चला रहा था और एक अंकल कार से मुझे पीछे से ठोकर मार कर वह भाग गए।

मेरे हाथ में चोट लग गई थी। मैं सड़क पर पड़ा रहा। वहां के जो लोग थे उन्होंने मुझे उठाकर किनारे बैठा दिया। फिर मेरी मम्मी आई मुझे लेकर गई डॉक्टर के पास। तो डॉक्टर ने बताया कि इस बच्चे का हाथ टूट गया है।

अब इस बच्चे के हाथ में प्लास्टर पर लग गया है और इसके हाथ का इलाज भी नहीं हो पा रहा है इस बच्चे को पता चला कि इसका हाथ टूट गया है यह बात सुनकर रोने लगा और अब वह कहता है कि हम अपना कोई भी काम नहीं कर पा रहे हैं ना ही खेलने जा पा रहे घर मैं रह कर थक गए हैं और तबीयत भी खराब होने लगी है।

लॉक डाउन में बच्चो को नए अनुभव और नई सीख मिली

रिपोर्टर आंचल लखनऊ

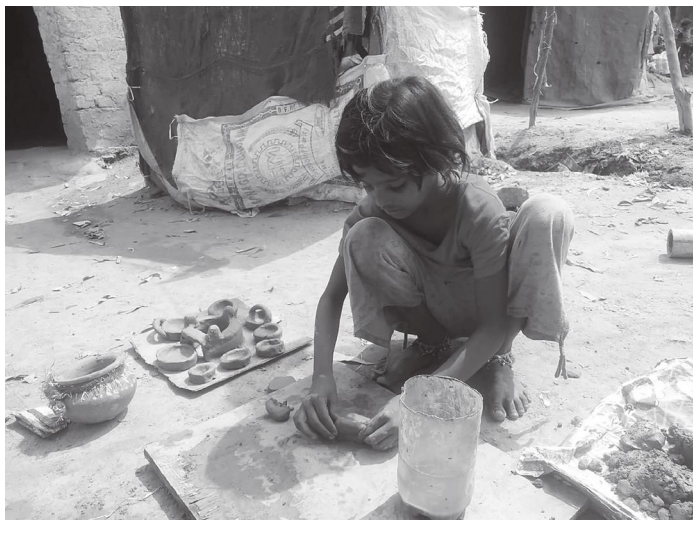

बालकनामा रिपोर्टर आंचल ने श्रम विहार नागर के बच्चो से बातचीत की और वाह के बच्चों से बातचीत की और बच्चों की समस्या जानने की कोशिश की तो यह पता चला कि इस लॉक डाउन में सोशल डिस्टेंस पालन करते हुए इस कोरोना महामारी के लॉक डाउन में मिट्टी छोटे-छोटे बर्तन बनाएं और उनको धूप में सुखाएं बच्चों ने बताया कि जब यह अचानक से लॉकडाउन लग गया जिसके कारण स्कूल सब बंद हो गए थे तो हम बच्चों ने यह खेल खेला जिसमें आप सोशल डिस्टेंस का पालन भी कर सकते हैं और यह जो कोरोना महामारी है जिसके कारण आप घर से बाहर नहीं जा सकते हैं तो यह हम बच्चों ने मिट्टी के बर्तन बनाकर हम बच्चों ने अपने ही घर पर खेला अपने भाई बहनों के साथ जिससे कि जो लॉकडाउन का समय था वह हम मिट्टी के बर्तन खेल कर समय व्यतीत किया और हमें एक नया अनुभव प्राप्त हुआ और हमने एक नई चीज बनाना सीखे

चाइल्ड लाइन की मदद से आनंदी पहुंची आश्रय ग्रह

रिपोर्टर आंचल

यह खबर आगरा शहर की है 7 वर्षीय आनंदी जिसका मानसिक संतुलन ठीक ना होने के कारण उसके माता पिता उसे बीच सड़क पर छोड़ कर चले गए। आनंदी समझती सब है लेकिन कुछ बोल नहीं पाती अपनी धुन में गुनगुनाती रहती है। उसके हाथ पैरों में जलने के निशान भी हैं देखने से ऐसा लग रहा था कि मानो उसे किसी ने जबरदस्ती जलाया हो लेकिन आनंदी कुछ बोल नहीं सकती इसीलिए इस बात का पता नहीं लगाया जा सकता है कि उसको किसी ने जलाया है या नहीं। और देखा जाए तो अगर किसी के घर में अपंग या विकलांग या फिर कोई बच्चा ऐसा हो जिसका मानसिक संतुलन ठीक नहीं होता तो ऐसे बच्चे की परवरिश अधिकतर गरीब परिवारो के माता पिता नहीं करते हैं उन्हें लगता है कि यह बच्चे किसी काम के नहीं है ऐसे बच्चों के साथ वह मेहनत नहीं करना चाहते हैं इसलिए मां बाप ऐसे बच्चों को सड़क पर ही छोड़ जाते हैं ऐसे बच्चों के साथ बहुत बुरा बर्ताव किया जाता है जबकि ऐसे बच्चों को सहारे और प्यार की बेहद जरूरत होती है बावजूद इसके माता-पिता अपने बच्चों को इस तरह बीच सड़क पर छोड़ कर जाते हैं। ऐसे बच्चों के लिए यह चिंता का विषय है। आनंदी के माता-पिता तो उसे सड़क पर ही छोड़ गए थे लेकिन चाइल्डलाइन की मदद से आनंदी की परवरिश अब एक आश्चर्य ग्रह में अच्छे से की जा रही है।

आर्थिक स्थिति को संभालता अमन

सौरव

12 वर्षाय परिवर्तित नाम अमन जो की नोएडा सेक्टर-126 रायपुर में अपने परिवार के साथ रहता है। अमन के माता पिता दोनो कम्पनी में साफ सफाई का काम करते है। लॉक डाउन के समय में अमन के माता पिता दोनो का काम छूट गया था। इस कारण राशन की दुकान पर पैसे भी नही दे पाए और कमरे का किराया भी नही दे पाए थे। इस कारण अमन होटल पर काम करने लगा है।

लॉक डाउन से पहले अमन प्राथमिक विद्यालय रायपुर के स्कूल में पढ़ने जाता था। जब से लॉक डाउन हुआ है अमन के घर की आर्थिक स्थिति ठीक नही है। उनके उपर कर्जा भी हो गया है इस कारण अमन होटल पर काम पर लग गया है। अमन होटल पर प्लेट में खाना लगाता है और प्लेट साफ करता है। अमन सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक काम करता है। अमन को काम करना अच्छा तो नही लगता है, लेकिन घर की आर्थिक स्थिति को देखते हुए उसे काम करना पड़ रहा है।

लड़कियों को 15 साल हो जाने पर उनके अभिभावक कर देते हैं जबरदस्ती शादी

रिपोर्टर आंचल लखनऊ

बालकनामा रिपोर्टेर आंचल ने अमीनाबाद के कॉन्टेक्ट पॉइंट के बच्चो से बात चीत कि तो यह लड़कियों की उम्र अगर 15 साल की हो जाती है तो उनकी शादी कर दी जाती है जबरदस्ती जब हमारी बालक नामा बालक नामा रिपोर्टर आंचल में उस लड़की से बातचीत की तो उस लड़की ने बताया कि अभी मेरी शादी करने की उम्र नहीं थी और मैं शादी नहीं करना चाहती थी फिर भी मेरी जबरदस्ती शादी कर दी गई और मैं पढ़ना लिखना चाहती थी खेलना करना चाहती थी और पढ़ लिखकर कुछ बनना चाहती थी जब हमारी बालक नामा रिपोर्टर आँचल ने उस लड़की से पूछा ऐसा सब लड़कियों के साथ होता है तो उस लड़की ने बोला जहां पर हम रहते हैं वहां पर अगर लड़की 15 साल की हो जाती है तो उनके मां-बाप जबरदस्ती उनकी शादी कर देते हैं और यह भी नहीं पूछते हैं कि आप शादी करना चाहती हो या नहीं चाहती हो जबरदस्ती बिना पूछे शादी कर देते हैं उस लड़की से बात करने पर यह भी पता चला कि जिसके साथ उस लड़की की शादी हुई है वह लड़का भी नाबालिग है और उस लड़की ने यह भी बताया कि जब वहां पर 14 या 15 साल की लड़कियों की शादी की जाती है तो वहां पर कोई यह भी नहीं कहता है कि आप इतनी छोटी उम्र में क्यों शादी किए दे रहे हैं जब कि यह बाल विवाह है और वहां पर कोई रोकता भी नहीं है

माता-पिता की रोज की लड़ाई से हुए बच्चे परेशान

पूनम आगरा

यह खबर आगरा शहर की नगला खुशाली क्षेत्र में रहने वाले बच्चों की है आउटरीच के दौरान बच्चों के साथ बैठक की गई जिसमें बच्चों द्वारा समस्याएं बताई गई 11 वर्षीय नगला खुशाली में रहने वाली मानसी ने बताया की मेरे मम्मी पापा आपस में लड़ते रहते हैं और जिस कारण मुझे और मेरे भाई को काफी परेशानी होती है जब हमें किसी चीज की जरूरत होती है या कुछ काम होता है तो हम अपने माता-पिता को बताते हैं लेकिन उनके रोज आपसी झगड़े में मां बोलती है अपने बाप से कहो और पिता बोलते हैं अपनी मां से कहो अब हम अपने मन की बात किस से कहें और आपस की लड़ाई का गुस्सा हमारे ऊपर उतार देते हैं अपने घर से कहां जाएं इस रोज रोज के झगड़ा से हम बेहद तंग आ चुके हैं कभी-कभी तो मन करता है कि हम घर छोड़कर कहीं भाग जाए। हमारे माता पिता अपने आपसी झगड़े की वजह से हमारे ऊपर ध्यान नहीं दे पाते हैं ना ही हमारी जरूरतों को पूरा कर पाते हैं और आपसी झगड़ा का गुस्सा हम बच्चों पर उतार देते हैं हमें मारते पीटते हैं और हमें गाली गलौज करते हैं हम बच्चे बेहद परेशान हैं मानसी ने यह भी बताया कि माता-पिता आपस में इसलिए लड़ाई झगड़ा करते हैं क्योंकि उनके पास कोई कामकाज नहीं है और घर में पैसे भी नहीं है जिससे घर का खर्चा चलाया जा सके घर की स्थिति खराब होती जा रही है और इस वजह से हमारे माता-पिता दोनों में लड़ाई होती है मारपीट होती है जिसका गुस्सा हम बच्चों पर उतार दिया जाता है।

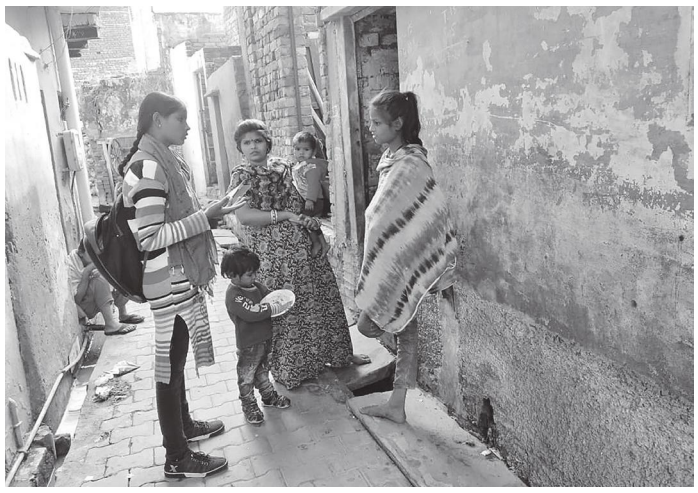

19 वर्ष की व्यक्ति से थी परेशान शिवानी

रिपोर्टर किशन बातूनी रिपोर्टर शिवानी

पत्रकार ने नोएडा के सेक्टर 5 के बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया इस दौरान 12 वर्षीय परिवर्तित नाम शिवानी ने बताया की मेरे तीन बहन और दो भाई है। मेरे पिता जी का नाम श्री भरत कामत है और माता जी का नाम श्रीमती मंजू देवी है। मेरी माताजी एक कंपनी में खाना बनाने का काम करती है। पिताजी सड़क के किनारे छोटी सी दुकान लगाते है जिसमें वह गुटखा, तम्बाकू बीड़ी आदी बेचने का काम करते हैं।इसी तरह हमारे घर का पालन पोषण होता है।हम एक किराये के मकान में रहते हैं। जो 4 मंजिल ऊँचा बना हुआ है। इसमें लगभग 35 कमरे हैं। और सभी कमरों में किरायेदार हैं। लेकिन मैं और मेरे माता पिता एक व्यक्ति से बेहद परेशान हैं।यह व्यक्ति 19 वर्ष का है। और यह भी इसी मकान के एक कमरे में किराये पर रहता है। यह व्यक्ति मुझे अश्लील नजरों से देखता है।तथा अपने दोस्तो से मेरे बारे में अश्लील बातें करता है,अपशब्द का प्रयोग करता है। एवं जब कभी मैं अपनी छत पर किसी काम से जाती हूं। तो वह मेरा पीछा करते हुए। छत पर आ जाता है। और वहाँ मुझे घूर घूरकर देखता है।इस दौरान मुझे बिलकुल अच्छा महसूस नहीं होता है मुझे बहुत बुरा लगता है।मैंने यह देखते हुए शिकायत भी की लेकिन एक दिन उस व्यक्ति ने कि वह मुझे पसंद करता है। यह सुनने के बाद भी जबसे मैंने यह बात अपने माता को बताई तो उस व्यक्ति ने मुझे और मेरे माता पिता जी को धमकियां देना शुरू कर दिया।

मेरे पिता जी ने इस व्यक्ति की शिकायत मकान मालिक से किया तो मकान मालिक ने उसको बहुत मारा और उससे घर खाली करवा लिए लेकिन उस व्यक्ति ने हमारे घर के पास में ही किराये पर मकान ले लिया है लेकिन मुझे अभी इस व्यक्ति से भय लगता है।लेकिन यदि इस व्यक्ति ने मुझे फिरसे परेशान किया तो अब मैं चाइल्डलाइन 1098 नंबर पर सम्पर्क करके जरूर मदद लुंगी। इसके लिये मेरे माता पिता भी सहमत है।शिवनी ने बताया की जबसे मकान मालिक ने इस व्यक्ति से घर खाली करवाया है तब से मुझे कोई परेशानी नहीं हुई अब वह व्यक्ति मेरा पीछा नहीं करता। लेकिन मुझे थोड़ा बहुत भय लगा रहता है लेकिन बालाकनामा के पत्रकार ने मुझे चाइल्ड हेल्पलाइन नम्बर 1098 के बारे में जानकारी देकर इस व्यक्ति से सतर्क रहने को कहा है अब मैं बिल्कुल सतर्क हूं यदि मुझे कुछ समस्या का जरा भी आभास हुआ तो मैं अपनी मदद कर सकती हूं।

होटल में काम करने पर हुआ मजबूरः-शमीम

बातूनी रिपोर्टर पूनम

शमीम तथा उसका परिवार सराय काले खां में किराए के एक कमरे में रहते हैं। पहले शमीम स्टेशन पर कभी कबाड़ा देने का काम किया करता था। और वह उस पैसों से अपना खर्चा चलाता था।तथा उसमें से कुछ पैसे अपने परिवार को भी दिया करता था। यह काम वह अपनी मर्जी से करता था। और इस काम में वह किसी भी तरह के समय का पाबंद नहीं था। साथ ही वह रोजाना एजुकेशन क्लब पर पढ़ाई करने भी आया करता था। लेकिन बीते कुछ महीनों के लॉकडाउन की वजह से शमीम के परिवार की हालत काफी खराब हो गई है। शमीम के परिवार पर काफी कर्जा हो गया है। और कमाई हो नहीं रही है। सबसे ज्यादा उन्हें बीते दो-तीन महीनो के कमरे के किराए की फिक्र है। इस वजह से शमीम ने भोगल में स्थित एक होटल में बर्तन धोने का काम करने लगा है। इस काम की वजह

से वह कभी शाम तो कभी रात को घर पर आ पाता है। और अपनी पढ़ाई भी नहीं कर पाता है। अब मैं होटल में काम करके अपने घर पर खर्च चला रहा है और अपना भाई बहनों का पेट भर रहा है।

छोटे बच्चों को बनाया जाता है नशे का आदि

पूनम आगरा

यह खबर आगरा शहर नई आबादी धनौली क्षेत्र की है आउटरीच के दौरान बच्चों के साथ बैठक किया गया जिसमें कुछ बच्चों द्वारा बताया गया की आजकल नशे की लत बढ़ती जा रही है और बड़े लोग कुछ छोटे बच्चों को अपने साथ लेकर उनको भारी मात्रा में नशा करवाते हैं और बच्चों को अपने साथ ऐसी जगह लेकर जाते हैं जहां पर कोई ना हो जैसे की रेल की पटरी जो हमारी बस्ती के पीछे हैं और वहां जाकर उन बच्चों वह कुछ नशा करने वाले व्यक्तियों के बीच छोड़ देते हैं। वह व्यक्ति बच्चों के साथ नशे की हालत में अश्लील हरकत भी करते हैं। लेकिन इस बात का अब तक पता नहीं लगाया जा सका है की वह व्यक्ति कौन है? कहां रहते?लेकिन बच्चों द्वारा यह खबर सामने आई है जिनका नाम गोपनीय रखा गया है।

14 वर्षीय राहुल परिवर्तित नाम ने

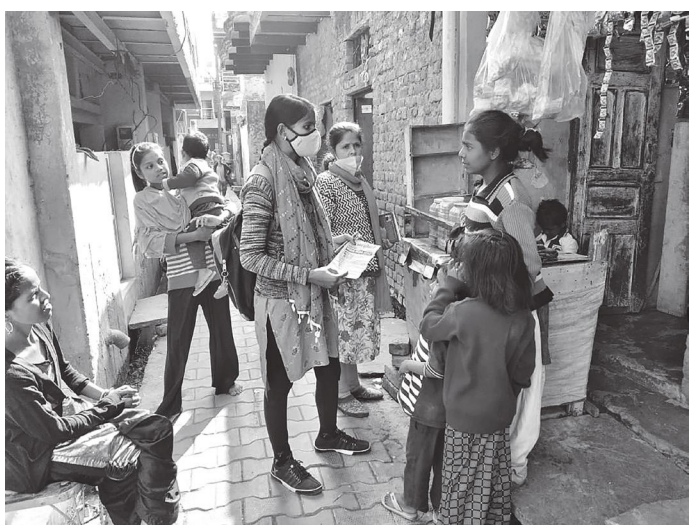

बताया कि यहां पर रहने वाले जो छोटे बच्चे हैं उनको बड़े व्यक्ति किसी सुनसान जगह पर ले जाकर उन्हें जबरन धीरे-धीरे नशा करना सिखाते हैं जैसे सिगरेट तंबाकू उन बच्चों को देते हैं और उन्हें छोटा-छोटा नशा करना सिखाते हैं उसके बाद उन्हें भारी मात्रा में नशा देना शुरू करते हैं इस तरह बच्चे नशे के चुंगल में फंस जाते हैं और नशे के आदी हो जाते हैं नशे की हालत में फिर वह अश्लील हरकत भी करना शुरू कर देते हैं।

भुखमरी ने किया लकड़ी काटने पर मजबूर

रिपोर्टर आंचल लखनऊ

बालाकनामा की रिपोर्टर आंचल ने मड़ियांव कॉन्टेक्ट प्वाइंट के बच्चों से बातचीत की और वहां की समस्या जानने की कोशिश की तो यह पता चला कि एक बच्चा जिसकी उम्र लगभग 12 साल की है वह लकड़ी काटने का काम करता है जब हमारी बालक नामा पत्रकार ने उस बच्चे से यह पूछा कि यह काम आप क्यों करते हो तो उस बच्चे ने बताया कि यह जो कोरोना महामारी लग जाने के कारण बाहर लॉक डाउन लग गया था जिसके कारण मम्मी पापा को काम नहीं मिला था जिसके कारण घर में बहुत सारी परेशानियां हो रही थी खाने पीने की बहुत सारी दिक्कत हो रही थी इसीलिए मैंने लकड़ी काटने का काम शुरू कर दिया जब हमारी बालक नामा पत्रकार ने पूछा कीआप लकड़ी काटकर क्या करते हो तो उस बच्चे ने बताया कि लकड़ी काटकर

उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर के सड़क पर लेकर जाकर भुट्टा के ठेले पर कुछ पैसों से बेच देता हूं और वह जो पैसा मिलता है उससे घर का खर्चा चलता है

घर स्थिति को देखते हुए आर्यन ने छोड़ा स्कूल

पूनम आगरा

यह खबर आगरा शहर क्षेत्र धनौली की है बातचीत के दौरान बालक नामा रिपोर्टर कुछ बच्चों से बात किया 13 वर्षीय आर्यन ने बताया कि मैं पहले स्कूल जाता था लेकिन जब से लॉकडाउन लगा था तब से मेरे घर की आर्थिक स्थिति खराब होती जा रही थी और इसके चलते मेरे माता पिता कामकाज नहीं कर पा रहे थे और हम लोगों को काफी परेशानियां हो रही थी और उसके बाद जब लॉकडाउन खुला तो मैं कामकाज ढूंढने गया लेकिन वहां कोई काम नहीं मिला फिर मुझे एक चाय वाले की दुकान मिली उस भाई की दुकान पर जाकर मैंने अपने काम के लिए बात की और चाय की दुकान वाले ने मुझे काम पर रख लिया मैं अब चाय बेचने का काम करता हूं जिसने मुझे प्रतिदिन 100 मिलते हैं और उसी से हम अपने घर का गुजर बसर कर लेते हैं और अब घर की स्थिति को देखते हुए मेरा मन स्कूल जाने को नहीं करता है क्योंकि इस समय खाने के लाले पड़े हुए अगर मैं काम नहीं करूंगा तो मेरे घर मैं खाना नहीं बनेगा इस कारण मैंने अपना स्कूल छोड़ दिया।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471